॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई 2020 वर्ष 24, अंक 07 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2076-77 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

आर्य नेता श्री राम नाथ सहगल अपनी अनन्त यात्रा पर

20 अप्रैल 2020 को हमें छोड़ चले गए

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

13 मार्च 1923- 20.04.2020

उपप्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकत्रीं समिति
उपप्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
मन्त्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा)
मन्त्री आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया (राजस्थान)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Punam Suri
President
DAV COLLEGE MANAGING COMMITTEE
ARYA PRADESHIK PRATINIDHI SABHA

प्रिय अजय

आदरणीय श्री रामनाथ सहगल जी हम सबको छोड़कर अनन्त यात्रा पर चले गए हैं, यह जानकर अत्यन्त दु:ख हुआ। परिवारजनों के दु:ख का तो अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। आर्य समाज तथा डी.ए.वी. को छाया देने वाला भारत ही नहीं पूरे विश्व में जहाँ भी आर्य समाज स्थापित है वहाँ हमारे सहगल जी का नाम अत्यन्त श्रद्धा से लिया जाता रहेगा। उनको दिए गए सम्मानों को शायद गिनना भी मुश्किल है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा की स्थापना तथा मन्त्री के रूप में श्री सहगल जी द्वारा की गई इस ट्रस्ट की सेवा अप्रतिम रहेगी।

डी.ए.वी. के साथ अपने संबंध के दौरान श्री सहगल जी ने इस संगठन के अच्छे और बुरे दिनों में अनन्य और अविस्मरणीय साथ दिया है। यह संबंध इतना गहरा हुआ कि वर्ष 2014 में डी.ए.वी. की ओर से उन्हें आजीवन उपलब्धि सम्मान (Life Time Achievment Award) से नवाजा भी गया।

मेरे पौत्र चि. आनन्द को गोद में लेकर बड़े प्यार से कहा करते थे कि मुंशी गणेशदास, महात्मा आनन्द स्वामी, श्री ओम प्रकाश, श्री पूनम सूरी, श्री योगी सूरी तथा इसके पुत्र चित्र आनन्द सूरी के रूप में इस परिवार से तो मेरा छः पीढ़ियों का सम्बन्ध है। मैं और मेरा परिवार भी इस प्यार के बदले उन्हें अपने बुजुर्गों की हैसीयत से आदर किया करते थे।

आज एक महान् बेटा हमसे जुदा हो गया है। मुझे याद है जब मैं छोटा सा था तो अपने माता-पिता के साथ आर्य समाज जाया करता था। आर्य समाज अनारकली में महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथा चल रही थी। श्री सहगल उस सत्संग में उपस्थित थे। स्वामी जी ने श्री सहगल के व्यक्तित्व और उनकी सेवाओं के प्रति अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा था ''धन्य है वह माँ! जिसने रामनाथ सहगल जैसा हीरा हमें दिया।''

मन भरा हुआ है। जज्बातों की इन्तहा है जिन्हें शब्दों में समेटना बिल्कुल मुश्किल है। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि हे प्रभो! हमारे सहगल जी अपनी अनन्त यात्रा पर हैं, उनके रास्ते में आने वाली रूकावटों को दूर कर इस महान् आत्मा को शान्ति देना। परिवार वालों के साथ-साथ हम सबको आघात को सहने का बल प्रदान करना।

प्रिय अजय! मुझे विश्वास है कि तुम इस दु:ख को धैर्यपूर्वक सहकर एक सुपुत्र की पूरी जिम्मेदारी निभाने की कोशिश करोगे।

शोक संविग्न

पूनम सूरी
प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति
एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

DAV College Managing Committee, Chitra Gupta Road, New Delhi-110055
Tel.: 91 11 23503500, e-mail: president@davcmc.net.in, website:http//davcmc.net.in

डी.ए.वी. परिसर की कुछ प्यारी यादें!

डी.ए.वी के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी के साथ

डी.ए.वी के महामन्त्री श्री आर.एस शर्मा जी के साथ

डी.ए.वी. चित्रगुप्ता रोड पर महात्मा हंसराज दिवस 1976 का चित्र

आर्य नेता श्री राम नाथ सहगल की कुछ पुरानी यादें!

जन्म-मृत्यु का चक्र आत्मा की मुक्ति व अनन्तकाल तक चलो

❒ मनमोहन कुमार आर्य

विज्ञान एवं दर्शन का नियम है कि अभाव से भाव पदार्थ उत्पन्न नहीं होता और भाव पदार्थों का अभाव नहीं होता। इसी आधार पर ईश्वर, जीवात्मा और इस सृष्टि का उपादान कारण त्रिगुणात्मक प्रकृति भाव पदार्थ सिद्ध होते हैं जो सदा से हैं तथा जिनका अभाव कभी नहीं होगा। यदि इस जगत् में प्रकृति न होती तो ईश्वर व जीवात्माओं के होते हुए भी यह भौतिक जगत व कार्य सृष्टि बन नहीं सकती थी। हमारे कहने का अभिप्राय है कि सृष्टि है तो इसके लिये ईश्वर, जीव तथा प्रख्रति इन तीन अनादि व नित्य पदार्थों का अस्तित्व होना आवश्यक एवं अपरिहार्य है। यह सिद्धान्त हमें वेद व वैदिक साहित्य जो विद्वान व तत्वदर्शी ऋषियों द्वारा प्रदत्त है, के अध्ययन से प्राप्त होता है। इस सिद्धान्त की विवेचना एवं परीक्षा करने पर यह सर्वांश में निर्दोष सिद्ध होता है। अतः ईश्वर, जीव व प्रकृति का यह त्रैतवाद का सिद्धान्त सत्य एवं निर्विवाद है। ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति तीनों सत्तायें अनादि, नित्य एवं अविनाशी हैं अतः इसके आधार पर जीवात्माओं का जन्म-मरण व पुनर्जन्म होना तर्कसंगत सिद्धान्त हैं। जन्म-मरण व पुनर्जन्म का सिद्धान्त वेद तथा सभी वैदिक शास्त्रों सहित तर्क एवं युक्ति से भी सिद्ध है। इस सिद्धान्त के आधार पर हम अनादि काल से जन्म व मृत्यु को प्राप्त होते आ रहे हैं और ऐसा ही अनन्त काल तक जारी रहेगा। इस आधार पर यह निश्चित होता है कि विगत समय में हमारे अनन्त बार जन्म व मृत्यु हो चुकी है। जीवात्मा को उसके कर्मों के अनुसार पुनर्जन्म मिलता रहता है। इस सिद्धान्त से मनुष्य का अगला जन्म मनुष्य व अन्य किसी भी प्राणी योनि में हो सकता है। यह एक सुविचारित तथ्य है कि मनुष्य का जन्म होना अन्य सभी योनियों में जन्म मिलने से कहीं अधिक अच्छा है। मनुष्य योनि में सुख अधिक व दुःख कम होता है। अपवाद तो मनुष्य योनि में भी मिल सकते हैं जहां अपनी गलती व दूसरे के अत्याचारों से कोई धार्मिक व सज्जन मनुष्य दूसरे पाप कर्मों में लिप्त मनुष्यों व समुदायों के द्वारा त्रस्त किया जा सकता है व मृत्यु को भी प्राप्त हो सकता है। इतिहास में इसके अनेक उदाहरण देखने को मिलते हैं।

हम मनुष्य हैं तथा हमारे पास परमात्मा का दिया हुआ शरीर व इसमें एक महत्वपूर्ण अंग बुद्धि भी है। बुद्धि से हम सोच विचार कर सत्य व असत्य का निर्णय कर सकते हैं। परमात्मा का सृष्टि के आदि काल में दिया गया वेद ज्ञान भी हमारे पास है। चार वेद ईश्वर ज्ञान होने के कारण सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। वेद से ईश्वर और आत्मा का सत्य स्वरूप प्राप्त होता है। वेदों के अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र्, सृष्टिकर्ता, जीवात्माओं के लिये सृष्टि की रचना व पालन करने वाला, सृष्टि की प्रलय करने वाला, जीवात्माओं को उनके पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार मनुष्य आदि विभिन्न योनियों में जन्म देने वाला तथा उन्हें कर्मानुसार सुख व दुःख प्रदान करने वाला है। परमात्मा वेदानुसार कर्म करने वाले मनुष्यों, इच्छा व द्वेष से ऊपर उठकर ईश्वर की उपासना कर उसका साक्षात्कार करने वालों तथा स्वहित के कार्यों को छोड़ परहित के कार्यों को करने वाली जीवात्माओं को मोक्ष भी प्रदान करते हैं। जीवात्मा एक सूक्ष्म सत्ता है जो एकदेशी, अल्प परिमाण, अल्पज्ञ, रंग, रूप व भार से रहित, अनादि, नित्य, अमर, अविनाशी, जन्म व मृत्यु को प्राप्त होने वाली जन्म-मरण में फंसी हुई एक सत्ता है। इस आत्मा को परमात्मा द्वारा मनुष्य योनि प्राप्त होने पर वेदज्ञान प्राप्त कर श्रेष्ठ कर्म करने तथा ईश्वर उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ एवं सभी वेदविहित कर्मों को करके मुक्ति का लक्ष्य प्राप्त करना होता है। यह सृष्टि मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने में साधन के रूप में कार्य करती है। जो सृष्टि में सुख व भोगों में फंस जाता है वह मोक्ष के लक्ष्य से दूर हो जाता है। वह कर्मानुसार बन्धनों में बन्ध कर भिन्न भिन्न योनियों में जन्म लेकर सुख व दुःख भोगता रहता है। दुःखों से मुक्ति के लिये आदर्श स्थिति वेदज्ञान प्राप्त कर साधना द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार करना ही है। ऐसा ही सृष्टि के आदि काल से हमारे सभी ऋषि, मुनि, विद्वान, चिन्तक, विचारक, योगी, ज्ञानी, ध्यानी, परमार्थी जन करते आये हैं। हमें भी उनका ही अनुसरण करना है। इसी से हमारा व सभी मनुष्यों का कल्याण होता है।

मनुष्य का आत्मा अनादि होने से अविनाशी है। यह सदा इस ब्रह्माण्ड में अस्तित्व में बना रहेगा। इसी कारण परमात्मा द्वारा इसके कर्मों के आधार पर आत्मा का जन्म-मरण होता रहेगा। अतः इसे दुःख के कारण जन्म व मृत्यु से बचने के लिये मुक्ति प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करने चाहिये। हम देख रहे हैं कि संसार में मनुष्य जन्म लेकर अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों के भ्रम में फंस कर मनुष्य अपना जीवन नष्ट कर लेते हैं। वह न तो ईश्वर के सत्यस्वरूप को प्राप्त हो पाते हैं और न ही उन्हें सत्य उपासना का ज्ञान होता है। इससे मनुष्य जन्म लेकर ईश्वर के ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप व सर्वशद्रिमानस्वरूप का साक्षात्कार करने से वंचित हो जाते हैं। अतः सभी मनुष्यों को अपने कर्तव्य को पहचानना चाहिये और ईश्वर को जानने व उसकी प्राप्ति में अपने जीवन का उचित समय लगाना चाहिये। इस काम को करने के लिये हमें सद्ग्रन्थों का अध्ययन करने सहित सद्पुरुषों की संगति करके साध्य की प्राप्ति के साधनों को जानकर उनको आचरण में लाना चाहिये। यही मनुष्य जीवन को कल्याण मार्ग पर चलाने व ईश्वर को प्राप्त करने का उपाय है। जीवन को सफल बनाने का अन्य कोई उपाय नहीं है जिससे हमारा वा हमारी आत्मा का कल्याण हो सकता है। सत्य को जानना व उसका ही आचरण करना धर्म कहलाता है। हमें इसी सूत्र को पकड़कर इसको सार्थक कर जीवन को सफल बनाना है।

सभी प्राणियों में विद्यमान आत्मा अमर व अविनाशी है। यह अनन्त काल तक अपने सत्यस्वरूप में बना रहेगा। अनन्त काल तक इसके जन्म व मरण होते रहेंगे। पुनर्जन्म के अनेक प्रमाण हैं। वेद एवं सभी ऋषि-मुनि पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। ऋषि दयानन्द जी ने भी पुनर्जन्म के अनेक प्रमाण अपने विश्व विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में बताये हैं। हमें इन प्रमाणों को देखना व इन पर विचार करना चाहिये। हमारी आत्मा की अनन्त काल की यात्र्ा में हम जन्म-मरण से छूट सकें और ईश्वर के दीर्घकालीन सान्निध्य को प्राप्त कर दैवीय आनन्द का भोग करते रहे, यही हमारा उद्देश्य होना चाहिये। इसी पर चर्चा व प्रेरणा करने

के उद्देश्य से हमने इस लेख की यह पंद्रियां लिखी हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे पाठक मित्र इन विचारों से सहमत होंगे। हम अपने सभी मित्रों को सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति, वेदभाष्य एवं आर्य विद्वानों के वैदिक विषयों पर महत्वपूर्ण ग्रन्थों के अध्ययन की प्रेरणा करते हैं। ऐसा करने से हम सबकी समस्त भ्रान्तियां दूर हो जायेंगी और हम अपने जीवन के लक्ष्य को जान कर उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो सकेंगे। हम यह भी कहना चाहते हैं अतीत काल में इसी वैदिक आध्यात्मिक विद्या के कारण भारत विश्व गुरु कहलाता था। ऋषि दयानन्द ने महाभारत काल के बाद विलुप्त इस वैदिक आध्यात्म विद्या को पुनः प्राप्त कर व उसका उद्धार कर भारत को पुनः विश्व गुरु बना दिया है। आध्यात्म विद्या में भारत आज भी विश्व गुरु है। आर्यसमाज का सौभाग्य है कि यह वैदिक आध्यात्म विद्या आर्यसमाज के पास है और वह इसका विश्व में प्रचार करता है।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 09412985121

Every men`s life ends the same way.
It is only the death of
how he lived
and how he died
That distinguise one man from others.

❑❑❑

The fear of death follows
from the fear of life.
A man who lives fully is prepared
to die at any time.

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक :–शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना)

गौ–दान : महा–दान

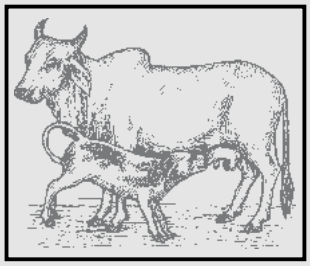

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन– प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/–** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप–प्रधाना)

एक दिव्य ज्योति जो महान ज्योति में विलीन हो गई

❒ चन्द्रशेखर शास्त्री

प्रत्येक संयोग का अंत वियोग है, जीवन का अंत मरण है। परंतु सुसंभावनाओं से परिपूर्ण जीवन अचानक अनंत में विलीन हो जाये तो कितना धैर्यवान व्यक्ति क्यों न हो धैर्य टूट जाता है। साहस, सेवा, समर्पण, सहृदयता, गहनता, सृजन, संतोष, समझ, स्नेह, सक्रियता की मूर्ति का नाम श्री रामनाथ सहगल है। डी.ए.वी. एवं आर्यप्रादेशिक सभा के उपप्रधान, टंकारा ट्रस्ट के यशस्वी मंत्री, अनेक संस्थाओं के प्राण, महान आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल जी के निधन से आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा परिवार जनों एवं हम सभी बंधु बांधवों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। अध्यात्म पथ पत्रिका परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि। चरैवेति चरैवेति, यह उनके जीवन का मूलमंत्र रहा है। श्री रामनाथ सहगल जी जब जहाँ बैठे, जब जहाँ खड़े हुए, वहाँ उन्होंने अपनी छाप छोड़ी।

यदि हम केवल उनके व्यक्तित्व का ही आकलन तथा मूल्यांकन करें तो हम उन्हें एक सहृदय, परोपकारी, कर्मनिष्ठ, मिलनसार, महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने वाले, समाज सुधारक, आत्मीयता पूर्ण, दीन दुखियों के सहायक तथा प्रेरक इत्यादि गुणों के रूप में देखते हैं। उनकी सहृदयता के कारण कोई भी व्यक्ति उनसे पहले ही मुलाकात में उनकी आत्मीयता का अनुभव करता है। उनका जीवन संयमित, अनुशासित एवं मर्यादित था। वे जीवन को गुनगुनाते हुए जीते थे, भुनभुनाते हुए नही ये मेरा अनुभव है उनके साथ बिताये हुए समय का।

जब मेरे दोनों बच्चों का नामकरण संस्कार हुआ, उस समय अपने व्यस्त समय में भी समय निकालकर बच्चों को आशीर्वाद देने पहुंचे। जब मेरे घर का गृहप्रवेश कार्यक्रम हुआ उस समय भी डिफेंस कॉलोनी से अनेक कार्यक्रमों को रद्द करते हुए मुझे अपनी शुभकामना एवं आशीर्वाद देने के लिए पधारे। रिश्तों को बखूबी निभाना जानते थे।

अध्यात्म पथ पत्रिका के तत्वावधान में भजन संध्या एवं यज्ञश्री सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज पश्चिम विहार के सभागार में हुआ। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त डॉ जी.वी.जी. कृष्णमूर्ति जी ने शाल ओढ़ाकर श्री रामनाथ सहगल जी का सम्मान किया। माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट की ओर से श्री रामनाथ सहगल जी को संस्कृति सेवा सम्मान से विभूषित किया गया। इनके सुयोग्य सुपुत्र टंकारा समाचार के सुयोग्य संपादक श्री अजय सहगल जी को यज्ञश्री सम्मान से सम्मानित किया गया। पूज्य स्वामी जगदीश्वरानंद सरस्वती जी, स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती जी, श्री भजनप्रकाश आर्य जी, माता आशा जी, श्री दर्शन अग्निहोत्री जी आदि महानुभावों ने सहगल जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

एक बार की बात है मैं एवं डॉ सुंदरलाल कथूरिया जी श्री रामनाथ सहगल जी के घर मिलने गये थे, तो वे बहुत प्रसन्न हुए और वे बहुत खुशी से कहने लगे देखो मेरे घर पहली बार ये दोनों विद्वान आये हैं उन्होंने तथा परिवारजनों ने खूब आतिथ्य सत्कार किया तथा हम दोनों को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

ऐसे थे विद्वत अनुरागी श्री रामनाथ सहगल जी। जो लोकहित करता है वह लोकप्रिय होता है। देश-विदेश में अत्यंत लोकप्रिय थे रामनाथ सहगल जी। वे इतने व्यापक व्यक्तित्व के धनी थे कि उसे किसी एक लेख की सीमा में समेट पाना मुश्किल है।

पत्रोत्तर देने में आर्यनेता रामनाथ सहगल जी सबसे अग्रणी थे। दिनांक 4-4-2017 को मेरे नाम पर लिखा हुआ पत्र मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

आदरणीय आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी

सादर नमस्ते।

आशा है कि आप स्वस्थ एवं कुशल होंगं। मैं हर समय आपके स्वास्थ्य लाभ एवं दीर्घायु की कामना करता हूँ। श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा का मासिक पत्र टंकारा समाचार मास अप्रैल 2017 अंक में आपका लेख प्रकाशित हुआ है जो कि एक प्रति टंकारा समाचार इस पत्र के संग्लन कर भिजवा रहे हैं। आप जो आर्य समाज एवं आर्य समाज से जुड़ी संस्थाओं की सेवा कर रहे हैं, उसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। आशा है कि आपका सहयोग भविष्य में इसी प्रकार बना रहेगा। इन्हीं कामनाओं के साथ-

भवदीय

(रामनाथ सहगल, मन्त्री)

ऐसे आत्मीयता एवं प्रोत्साहित करने वाले अनेक पत्र मेरे पास सुरक्षित है। उनके साथ अनेकों संस्मरण व यादें जुड़ी हैं। आर्यों के हृदय सम्राट, बुलंद आवाज के धनी, कर्मयोगी, कुशल संगठन कर्ता, कुशल प्रशासक, महान समाजसेवी, परोपकारी, ऋषि पथ के पथिक स्व. श्री रामनाथ सहगल जी को शत्-शत् नमन।

फ्लैट नम्बर सी-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

मो. 9810084806, E-mail:acharya_chandrashekhar@yahoo.com

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

कुछ भूली बिसरी यादें

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के साथ।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन साथ में मेहरचन्द महाजन।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन लंदन में सम्मिलित होने हेतु हवाई अड्डे पर।

दानवीर महाशय धर्मपाल जी द्वारा सम्मानित किए जाते हुए।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय शिविर 1960 में प्रकाशवीर शास्त्री एवम् श्री राम गोपाल शाल वाले जी के साथ

भारत के पूर्व रक्षा मन्त्री वाई. बी. चौहान 1962 रामलीला मैदान

पूर्व उपप्रधानमन्त्री लालकृष्ण आडवाणी जी के साथ

1977 में मौरिसस के राष्ट्रपति एवम् प्रो. वेद व्यास जी के साथ

आर्य महासम्मेलन नैरोबी में सम्मिलित होने जाते, साथ में
श्री दरबारी लाल एवम् टी.आर. गुप्ता जी

आर्य समाज का प्रथम प्रतिनिधि मंडल समुद्री जहाज से जाने से पूर्व श्री रामदास मलिक, श्री सरदारी लाल वर्मा जी के साथ

प्रधानमन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ

प्रधानमन्त्री राजीव गांधी एवम् डी.ए.वी. प्रो. वेद व्यास जी के साथ

आर्य समाज बाजार सीता राम में लाला सुरज भान जी के साथ

प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ

वीर अर्जुन के सम्पादक श्री के. नरेन्द्र जी के साथ

1960 में वित्तमन्त्री एस.के. पाटिल जी के साथ

विदेश मन्त्री भारत सरकार

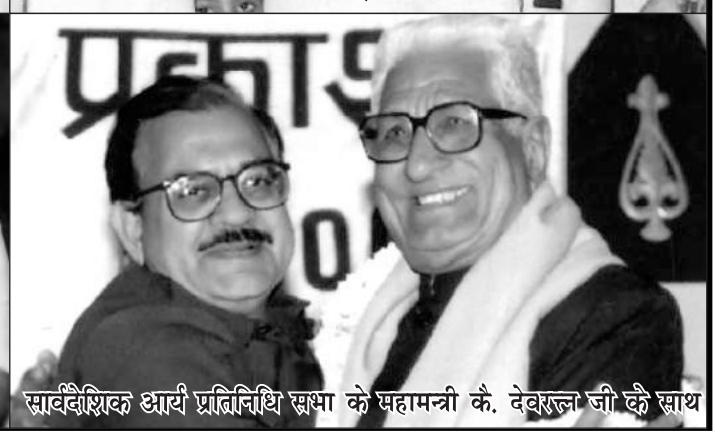

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री कै. देवरत्न जी के साथ

श्रद्धांजलि

विज्ञायः निधनं तस्य, शोकेनाकुलितं मनः।
महागति महाशान्तिं, प्राप्नोतु पुण्यलोकगः॥

भावार्थ- श्री रामनाथ सहगल के निधन का समाचार सुनकर (जानकर) मेरा मन शोक से आकुलित हो गया। वह पुण्यलोक को जानेवाला आत्मा महागति और महाशान्ति को प्राप्त करे।

'अजयो' हि सुतः तस्य, 'मंजु' नाम सुता ननु।
पौत्राः पुत्रवधूश्चैव, शोकोदधिं गतास्तु ते॥

भावार्थ-उनके पुत्र 'अजय सहगल' पुत्री मंजु, पुत्रवधू पौत्रादि सारा परिवार शोक सागर में समाहित हैं।

सहगल कुलोत्पन्नः, रामनाथ सुनामकः।
महानेता हि आर्याणा, ऋषिभक्तः सुयोजकः॥

भावार्थ- श्री रामनाथ सुनाम वाले, सहगल कुल में उत्पन्न, आर्यों के महानेता, ऋषिदयानन्द के भक्त और सबको कार्यों में प्रेरित करने वाले थे।

कुलरत्नो हि आर्याणां, भासमानः शशी सदा।
बन्धुः, भ्राता, मित्रं चैव, रक्षको हितसाधकः॥

भावार्थ- आर्य समाजियों के कुल के रत्न (श्री राम नाथ सहगल) हमेशा आसमान में चन्द्रमा की तरह चमकते हुए (अपने विभिन्न आयु वर्गानुसार) लोगों के बन्धु, भाई, सच्चे मित्र, रक्षक और सबका हित करने वाले थे। (अपने 97 वर्ष के जीवन में सदा मंदिर मार्ग में बैठकर ब्रह्मचारियों, आचार्यों, गायकों, धर्मशिक्षकों, विद्वानों और सन्यासियों की सेवा तथा भलाई में लगे रहते थे।

जन्मभूमिस्तु टंकारा, सूत्रधारो नियोजकः।
मन्दिरं डी.ए.वी. संस्था, कर्मभूमिः सदा तव॥

भावार्थ-महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा के निर्माण कार्यों के सूत्रधार और नियोजक थें आर्यसमाज मन्दिर (अनारकली) और डी.ए.वी. संस्था दोनों पवित्र स्थान उनकी कर्मभूमि के लिए हमेशा याद रहेंगे।

ऋषि भक्तो गतो लोकात्, महावृक्षः महायशः। (यशोधनः)
पुण्यकर्मस्थारूढः, गुणगाथां विहाय वै॥

भावार्थ-परोपकारी महावृक्ष के समान, महान यशस्वी (यश रूपी धन वाले) अपने पुण्यकर्मों के पावन रथ पर बैठकर ऋषि दयानन्द का प्यारा भक्त श्री रामनाथ सहगल आज अपने महान गुणों की गाथा (कथा-संस्मरण-याद) छोड़कर निश्चय से इस संसार से चले गये।

मेरे 35 वर्षों से अधिक दिल्ली निवास के समय उनका अपार स्नेह मुझे मिला। आज इस महान आत्मा को श्रद्धासहित सादर श्रद्धांजलि सर्मपण।

- **आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा,** मो. 9871020844
स्वस्ति सदन, 10 आदित्य नगर, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

प्रवेश सूचना
श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा (गुरुकुल) में प्रवेश प्रारम्भ है। विद्यालय में अष्टाध्यायी, वेद, दर्शनशास्त्र आदि पढ़ने की उत्तम व्यवस्था है। सुविधा युक्त आवास, पौष्टिक भोजन, प्रातराश आदि के साथ गुरुकुलीय अनुशासन है। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) के आर्ष पाठ्यक्रम से मान्यता प्राप्त है। कक्षा सातवी और नौंवी उत्तीर्ण, स्वस्थ और चरित्रवान मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी समीप की आर्यसमाज के पदाधिकारी के पत्र तथा अपनी अंकशीट के साथ आवेदन करें।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
डाक टंकारा, जिला-मोरबी (सौराष्ट्र-गुजरात)-363650, मो. 09913251448

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना)

श्रद्धांजलि

उनके पदचिन्हों पर उसी प्रकार चलने वाले उनके पुत्र श्री अजय सहगल अपने वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के कार्य में निरंतर अग्रसर रहकर अपने पिता को वास्तविक श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। आशा है इसी प्रकार वे तन मन धन से अपना योगदान देते रहेंगे।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी आनंदमयी गोद में स्थान प्रदान करें। **-डॉ सोमदेव शास्त्री, (मुंबई)**

❑❑❑

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली के अद्वितीय विकास के चितेरे, विश्वपटल पर आर्यों की श्रद्धा व आस्था के इस केंद्र की ख्याति को प्रसरित करने वाले, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री पूज्य रामनाथ जी सहगल अब हमारे मध्य नहीं रहे। सहगल साहब ने भाई अजय जी के रूप में जो सौगात आर्यसमाज को दी है, उससे उनकी कमी कुछ हद तक अवश्य पूर्ण होगी।

श्रीमद्दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की इस विभूति को चिर विदा देते हुए परमेश प्रभु के श्री चरणों में यही विनय करते हैं कि परिवार के सभी सदस्यों को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करें। **अशोक आर्य**, कार्यकारी अध्यक्ष

❑❑❑

We are saddened to hear the passing away of Shri Ram Nath ji Sehgal. A Noble, Kind hearted, dedicated father, grand father and great grandfather.

His contributions and Sewa to various Arya Samajs, DAV Various Charitable Societies, Tankara are immense to count on and will ever be remembered and missed. My father and our family knew him well and as we worked together at many grounds. I and my wife Savita extend our deepest sympathies to you and your family. Please accept our deepest condolences. **Veer Mukhi,** Arya Samaj of Long Island, NY

❑❑❑

कार्यनिष्ठा, उत्साह एवं ऊर्जा से भरे हुवे सहगल जी को कौन नहीं जानता था। उन्होंने वर्षो तक टंकारा में महर्षि दयानन्द के उपकारों से उऋण होने का प्रयास अपनी अंतिम सांस तक किया था। उन्होंने भवन को उच्च कोटिका बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। वह सार्वजनिक रूप से कहा करते थे कि- "I am a Big Beggar"-हमने उनको टंकारा के सर्वांगीण उत्कर्ष के एक मात्र उद्देश्य के लिये भिक्षुक बनते देखा है। रामनाथ सहगल जी को आर्य समाज परिवार भुज के सभी सदस्य अपने हृदय की गहराइयों से श्रद्धासुमन अर्पित करते है।

- करसनभाई वेलाणी एवं, समस्त आर्य समाज भुज परिवार

❑❑❑

यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि आपके परम पूज्य पिताजी आदरणीय श्री रामनाथ सहगल जी का स्वर्गवास हो गया है। आर्य समाज और महर्षि दयानंद जी के विचारों को दिग-दिगान्तरों में फैलाने वाले पूज्य सहगल जी-एक महान युग-पुरुष थे, जिनका समस्त जीवन वैदिक धर्म, समाज सुधार, मानवता एवं परोपकार के प्रति निस्वार्थ -निश्छल भाव से समर्पित रहा। मेरे जीवन में तो उनका आशीर्वाद सदा ही पितृतुल्य रहा, मैं उनकी जीवन भर आभारी रहूगीं।

इरा खन्ना, प्रिन्सीपल डी.ए.वी. कैलाश हिल्स

निम्न संस्थाओं द्वारा सन्देश प्राप्त हुए

1. डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति
2. आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् भारत की सभी उपप्रतिनिधि सभाएं
3. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली
4. आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया
5. आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली प्रदेश
6. दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा
7. भारतीय हिन्दू सभा/भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट
8. आर्य प्रतिनिधि सभा (हरियाणा), (पंजाब), (हिमाचल) (गुजरात), (उत्तर प्रदेश), (बिहार), (झारखण्ड)।
9. केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
10. सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल
11. सार्वदेशिक आर्य वीर दल
12. आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई एवम् महाराष्ट्र
13. परोपकारिणी सभा
14. आर्य समाज अनारकली, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली
15. आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली
16. आर्य अनाथालय फिरोजपुर कैन्ट
17. आचार्य इन्द्रदेव सत्यनिष्ठ
18. डॉ. रामप्रकाश शर्मा सरस, हिन्दी सलाहकार रक्षा मन्त्रालय भारत सरकार
19. आर्य समाज चैम्बुर
20. आर्य समाज टंकारा
21. आर्य समाज भुज
22. आर्य समाज पौरबन्दर/आर्य प्रकाशन नई दिल्ली
23. आर्य समाज जी.टी. रोड खन्ना
24. आर्य समाज रमेश नगर, नई दिल्ली
25. आर्य समाज कस्तुरबा नगर
26. श्री ईश्वर दयाल माथुर
27. आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़
28. गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली
29. वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्य नगर, रोहतक

आभार

उपरोक्त शोक सन्देशों के अतिरिक्त पूरे भारत एवम् विदेशों से कम्प्यूटर एवम् अन्य माध्यमों से संवेदना सन्देश प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त पूरे भारत से डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के प्रिन्सीपल द्वारा मोबाइल के माध्यम से प्राप्त हुए। पूरे विश्व/देश में तालाबन्दी होने के कारण शोक सभा एवम् श्रद्धांजलि सभा ना हो पाने के कारण मैं सभी से क्षमा प्रार्थी हूं एवम् उन सभी उपरोक्त महानुभावों का अन्तः हृदय से धन्यवाद करता हो जो हमारे परिवार के इस दुःख के समय में हमारे साथ खड़े रहे। **-अजय सहगल, पुत्र**

अपने पिता की शान हूँ मैं
उनके होठों पर प्यारी सी मुस्कान हूँ मैं
उनकी कभी ना मिटने वाली पहचान हूँ मैं

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी के साथ

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री वी.पी. सिंह जी के साथ

भूतपूर्व रक्षामन्त्री श्री के.सी. पंत जी के साथ

डी.ए.वी. के प्रधान स्व. श्री जी.पी. चौपड़ा जी के साथ

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
के महामन्त्री डॉ.एस.के. शर्मा जी के साथ

आचार्य ज्ञानेन्द्र एवम् ब्रह्मचारी राज सिंह एवम् विनय आर्य उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ

दानवीर महाशय धर्मपाल एवम् श्री आनन्द चौहान डायरेक्टर एमेटी शिक्षण संस्थान एवम् ए.के.सी. ग्रुप

पुत्र तुल्य श्री विनय आर्य जी के साथ।

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री योगेश मुंजाल जी के साथ

आचार्य धर्मपाल आर्य प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवम् उपप्रधानमन्त्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी के साथ

कर्नाटक के राज्यपाल डॉ. चतुर्वेदी एवम् फ्रन्टीयर बिस्कुट कम्पनी के संस्थापक श्री सेठी जी के साथ

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के 95वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सहगल जी

पारिवारिक यज्ञ में सम्मिलित

बेटी सुदेश एवम् मंजु के साथ 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में

परपौत्री स्वरा के साथ

पौत्रवधू स्तुति एवम् परपौत्र अरहान के साथ

परम सहयोगी दानवीर ठुकराल जी के साथ

Death is Not The Opposite of Life But Part of Life.

टंकारा समाचार जुलाई 2020

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-07-2020

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.06.2020

एम डी एच मसालों की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता के 101 साल, बेमिसाल !

1919·CELEBRATING·2019

1919· शताब्दी उत्सव ·2019

100

Years of affinity till infinity

आत्मीयता अनन्त तक

विश्व प्रसिद्ध एम डी एच मसाले 101 सालों से शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।

MDH मसालों में 101 साल की शुद्धता के जश्न पर

अपने सभी ग्राहकों, वितरकों एवं शुभचिन्तकों को हार्दिक बधाई

विश्व प्रसिद्ध एमडीएच मसाले शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे

भारत सरकार ने व्यापार और उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण (Trade & Industry, Food Processing) में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दिनांक 16 मार्च, 2019 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में महाशय जी को भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा पद्मभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया।

भारत सरकार द्वारा "ITID Quality Excellence Award" से सम्मानित किया गया। यूरोप में मसालों की शुद्धता के लिए "Arch of Europe" प्रदान किया गया। "Reader Digest Most Trusted Brand Platinum Award" भी प्रदान किया गया।

The Brand Trust Report ने वर्ष 2013 से 2019 तक लगातार 5 वर्षों के लिए ब्रांड एमडीएच को India's Most Trusted Masala Brand & India's Most Attractive Brands का स्थान दिया है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच–सच

महाशय धर्मपाल जी ने सियालकोट (पाकिस्तान) से आकर कठिन परिस्थितियों और संघर्ष से अपने जीवन को संवारा है और बड़े पैमाने पर समाज और मानव जाति की सेवा के लिये अपने व्यवसाय को समर्पित किया है। अधिक जानने के लिये YouTube Channel पर Mahashay Dharampal Gulati टाईप करें और देखें।

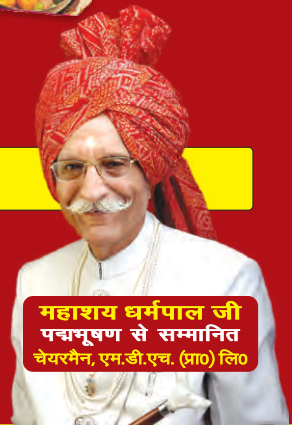

महाशय धर्मपाल जी
पद्मभूषण से सम्मानित
चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा0) लि0

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय